

कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिन्द्रिय जीवोंके आलाप सिद्धोंके आलापोंके समान समझना चाहिए।

इसप्रकार इन्द्रिय मार्गणा समाप्त हुई।

कायाणुवादेण ओघालावे भण्णमाणे अत्थि चोदस गुणङ्गाणाणि, दो वा तिण्णि वा, चत्तारि वा छ्वा, छ्वा णव वा, अट्ठ वा बारह वा, दस वा पण्णारह वा, बारस वा अट्ठारस वा, चोदस वा एकवीस वा, सोलस वा१ (प्रतिषु 'अट्ठावीस वा' इति पाठः।) चउवीस वा, अट्ठारस वा सत्तावीस वा, वीस वा तीस वा, बावीस वा तेत्तीस वा, चउवीस वा २ (२ प्रतिषु 'चोवीस वा तेत्तीस वा' इति पाठव्युत्क्रमः। अत उपरि प्रतिषु 'चउतीस वा' इति पाठोऽधिकः।) वा छत्तीस वा, छब्बीस वा एगुणचालीस वा, अट्ठावीस वा बाएतालीस वा, तीस वा पंचेतालीस वा, बत्तीस वा अट्ठेतालीस वा, चउतीस वा एकवंचास वा, छत्तीस वा चउवंचास वा, अट्ठतीस वा सत्तवंचास वा जीवसमासा। दो जीवसमासेत्ति भण्णिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सब्बे जीवा दुविहा भवन्ति, अदो दो जीवसमासा वुच्चन्ति। तिण्णि जीवसमासेत्ति वुत्ते णिव्वत्तिपज्जत्ता णिव्वत्तिअपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिण्णि जीवसमासा भवन्ति। चत्तारि वा इदि वुत्ते तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चत्तारि जीवसमासा। छ्वा इदि वुत्ते दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं छ जीवसमासा। अधवा थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता,

कायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप कहनेपर--- चौदहों गुणस्थान होते हैं। दो अथवा तीन, चार अथवा छह, छह अथवा नौ, आठ अथवा बारह, दश अथवा पन्द्रह, बारह अथवा अठारह, चौदह अथवा इक्कीस, सोलह अथवा चौवीस, अठारह अथवा सत्तावीस, बीस अथवा तीस, बावीस अथवा तेत्तीस, चौवीस अथवा छत्तीस, छब्बीस अथवा उनचालीस, अट्ठावीस अथवा बयालीस, तीस

अथवा पैंतालीस, बत्तीस अथवा अडतालीस, चौतीस अथवा एकावन, छत्तीस अथवा चौपन, अडतीस अथवा सत्तावन जीवसमास होते हैं आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं -

दो जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर पर्याप्तक और अपर्याप्तके भेदसे सभी जीव दो प्रकारके होते हैं; अतएव दो जीवसमास कहे जाते हैं। तीन जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर निर्वृत्तिपर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इस प्रकार तीन जीवसमास होते हैं। ऐसा कहनेपर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक; इसप्रकार चार जीवसमास कहे जाते हैं। छह जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर त्रस और स्थावरके दो निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दो निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दो लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। अथवा, स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और

तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीवसमासा१ (मु. समासा। तिण्णि) हवन्ति। तिण्णि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा। तिण्णि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीवसमासा हवन्ति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा, दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया वियलिंदिया ति, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता२ (मु. अपज्जत्ता एवं) ति एवं अड्ढ जीवसमासा। चत्तारि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा ति एवं बारस जीवसमासा हवन्ति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता, अपज्जत्ता, सुहुमकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पंचिंदिया अपंचिंदिया, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो, दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं दस जीवसमासा हवन्ति। पंच णिव्वत्ति

विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियके तीन निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तीन निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तीन लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार नौ जीवसमास होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार आठ जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके चार निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चार निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चार लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्मकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पंचेन्द्रिय और अपंचेन्द्रिय (विकलेन्द्रिय)। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक। संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अपंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार दश जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, संज्ञी पंचेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय

पञ्जत्तजीवसमासा पंच णिव्वत्तिअपञ्जत्तजीवसमासा पंच लद्धिअपञ्जत्तजीवसमासा एवं पण्णारस जीवसमासा हवन्ति। पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं बारस जीवसमासा हवन्ति। छ णिव्वत्तिपञ्जत्तजीवसमासा छ णिव्वत्तिअपञ्जत्तजीवसमासा छ लद्धिअपञ्जत्तजीवसमासा एवमद्धारस जीवसमासा हवन्ति। एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता,

तेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चउरिदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता त्ति एवं चोदस जीवसमासा हवंति। सत्त णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्त णिव्वत्तिअपज्जत्ता सत्त लद्धिअपज्जत्ता एदे सव्वे घेत्तूण एक्कवीस जीवसमासा हवंति। पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता, अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता

जीवोंके पांच निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पांच निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और पांच लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार पन्द्रह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। तेजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इस प्रकार बारह जीवसमास होते हैं। छहों कायिक जीवोंकी अपेक्षा छ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, छ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और छह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार अठारह जीवसमास होते हैं। एकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। व्दीन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रीन्द्रिय दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। चतुरिन्द्रिय दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक। संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार चौदह जीवसमास होते हैं। बादर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय इन सात प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा सात निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सात निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सात लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलकर इक्कीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और

अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया चेदि, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता ति, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवं सोलस जीवसमासा हवंति । णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा अट्ट, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ट, अट्टण्हमपज्जत्तजीवसमासाणं मज्झे अट्ट लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा हवंति एवं चउवीस जीवसमासा । पुढवि काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बादरणिगोदपडिड्विदवदिरित्त-पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सयलिंदिया विय-

अपर्याप्तक । तेजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर । प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय । सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इस प्रकार सोलह जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पति-कायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा आठ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, आठ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और आठ अपर्याप्तक जीवसमासोंमें आठ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । जलकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । अग्नि-कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर । प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदप्रतिष्ठित

और बादरनिगोदअप्रतिष्ठित। बादरनिगोदप्रतिष्ठित जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। बादरनिगोदप्रतिष्ठितसे भिन्न अर्थात् बादरनिगोदअप्रतिष्ठित प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक

लिनदिया चेदि, सयलिनदिया दुविहा पज्जत्ता, अपज्जत्ता, वियलिनदिया दुविहा पज्जत्ता, अपज्जत्ता, एवमद्धारस जीवसमासा हवन्ति। णव णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा णव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा णव लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा१ (प्रतिषु 'णवलद्धि समासा' इति पाठो नास्ति ।) एदे सब्बे वि घेतूण सत्तावीस जीवसमासा हवन्ति। पुव्विल्ल-अद्धारस-जीवसमासम्भन्तरे साधारण-वणप्फदिपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय साधारणवणप्फदिकाइया दुविहा णिच्चणिगोदा चदुगदिणिगोदा चेदि। णिच्चणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चदुगदिणि-गोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि जीवसमासे पक्खित्ते वीस जीवसमासा हवन्ति। दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एदे तीस जीवसमासा हवन्ति। पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फदिकाइया एदे सब्बे दुविहा बादरा सुहुमा त्ति, सब्बे बादरा सब्बे च सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि दुविहा हवन्ति, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवमेदे बावीस जीवसमासा। णिव्वत्तिपज्जत्तजीव-

और पर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इस प्रकार ये अठारह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय इन नौ प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा नौ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, नौ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और नौ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर सत्तावीस जीवसमास होते हैं। पूर्वमें कहे गये अठारह जीवसमासोंमेंसे साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर साधारणवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद। नित्यनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। चतुर्गतिनिगोद दो प्रकारके होते हैं,

पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलनेपर बीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, नित्यनिगोद, चतुर्गतिनिगोद, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय इन दश प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा दश निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दश निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दश लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक ये पांचो कायके जीव दो दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। ये सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक एक-एक कायके सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव दो-दो प्रकारके हो जाते हैं। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इस प्रकार ये सब मिलाकर

समासा एक्कारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारस एवं तेत्तीस जीवसमासा हवंति। बावीस-जीवसमासाणमब्भंतरे तसपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय तसकाइया दुविहा हवंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अमणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एदे चत्तारि पक्खित्ते चउवीस जीवसमासा हवंति। बारस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा बारस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा बारस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हवंति। पुव्विल्ल-चउवीसण्ह मज्झे अमणाणं पज्जत्त-अपज्जत्त-दो-जीवसमासे अवणिय अमणा दुविहा सयल्लिंदिया वियल्लिंदिया चेदि, सयल्लिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियल्लिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चेदि एदे चत्तारि पक्खित्ते छत्तीस जीवसमासा हवंति। तेरस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तेरस णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तेरस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे सब्बे एगूणचालीस जीवसमासा हवंति। छव्वीसण्हं मज्झे वणप्फदिकाइयाणं चत्तारि जीवसमासे अवणिय

बावीस जीवसमास हो जाते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद होते हैं, और त्रसकायिक इन ग्यारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा ग्यारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, ग्यारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास

और ग्यारह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास इस प्रकार सब मिलाकर तेतीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त बावीस जीवसमासोंमेंसे त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, समनस्क (संज्ञी) और अमनस्क (असंज्ञी)। समनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलानेपर चौबीस जीवसमास होते हैं। पृथिविकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, और वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद और समनस्क त्रसकायिक तथा अमनस्क त्रसकायिक इन बारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा बारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, बारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और बारह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त चौबीस जीवसमासोंमेंसे अमनस्क जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इन चार जीवसमासोंको मिला देनेपर छब्बीस जीवसमास होते हैं। पांचो स्थावरकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा विकलेन्द्रिय, अमनस्क पंचेन्द्रिय और समनस्क पंचेन्द्रिय इन तेरह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा तेरह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तेरह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तेरह लक्ष्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर उनतालीस जीवसमास होते हैं। छब्बीस जीवसमासोंमेंसे वनस्पतिकायिक जीवोंके

वणफ्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे छ जीवसमासे पक्खित्ते अट्ठावीस जीवसमासा हवन्ति। चउदस णिव्वत्तिपज्जत्त-जीवसमासा चउदस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा चउदस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे बादालीस जीवसमासा। अट्ठावीसण्हं मज्झे पत्तेयसरीर-पज्जत्तअपज्जत्त दो जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, तेवि सब्बे दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि भंगे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हवन्ति। णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस एवमेदे सब्बे वि पंचेतालीस

जीवसमासा हवन्ति। पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-साधारणशरीरवणष्फदिकाइया पत्तेयं पत्तेय बादर-
सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेदेण चउव्विहा हवन्ति, पत्तेयसरीरा वेइंदिया,

चार जीवसमास निकालकर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। ये दोनों प्रकारके जीव भी दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये छह जीवसमास मिला देनेपर अट्ठावीस जीवसमास होते हैं। पृथिविकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद, प्रत्येक वनस्पतिकायिक, विकलेन्द्रिय, समनस्कपंचेन्द्रिय और अमनस्कपंचेन्द्रिय इन चौदहों प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा चौदह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास चौदह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चौदह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास, इसप्रकार ये सब मिलाकर ब्यालीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त अट्ठावीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक और बादरनिगोदअयोनिक। वे भी सब दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इस प्रकार ये चार भंग मिला देनेपर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर इनके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पति और अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पति, विकलेन्द्रिय, अमनस्कपंचेन्द्रिय और समनस्कपंचेन्द्रिय इसप्रकार इन पन्द्रह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा पन्द्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पन्द्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और पन्द्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर पैंतालीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, और साधारणशरीर वनस्पतिकायिक ये पांच प्रकारके जीव पृथक्पृथक् बादर, सूक्ष्म और उनमें भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार चार प्रकारके होते

तेइंदिया, चउरिंदिया, असण्णिपंचिंदिया, सण्णिपंचिंदिया पत्तेयं पत्तेयं पज्जत्ता१ (मु. पज्जत्ता अपज्जत्ता १) पज्जत्तभेदेण दुविहा हवन्ति। एदे सव्वे मेलिदे२ (मु. मिलिदे १) बत्तीस जीवसमासा

हवन्ति । सोलस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा सोलस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा सोलस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा च मेलिदे अट्ठेतालीस जीवसमासा हवन्ति । बत्तीस-जीवसमासेसु पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, ते च पत्तेयं पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा एदे चत्तारि पक्खित्ते चोत्तीस जीवसमासा हवन्ति । सत्तारस णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्तारस णिव्वत्ति-अपज्जत्ता सत्तारस लद्धि-अपज्जत्ता एदे सव्वे एक्कावण्ण जीवसमासा हवन्ति । पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-णिच्चणिगोद-चउगदिणिगोदा बादरा सुहुमा च पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा हवन्ति, पत्तेयवण्णफ्फदि-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिन्दिय-असण्णि-सण्णि-पज्जत्ता पज्जत्तभेएण एदे वि पत्तेयं दुविहा हवन्ति एदे सव्वे वि छत्तीस जीवसमासा हवन्ति ।

हैं । प्रत्येक शरीरवनस्पतिकायिक, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय ये छहों प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । इसप्रकार ये सब मिलाने पर बत्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंक बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सोलह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सोलह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सोलह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिला देनेपर अडतालीस जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त बत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येक शरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येक शरीरवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक (प्रतिष्ठित) और बादरनिगोद अप्रतिष्ठित । वे दोनों पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । ये चार जीवसमास मिला देनेपर चौतीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येक-वनस्पतिकायिक, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञीक-पंचेन्द्रिय और संज्ञीक-पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सत्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सत्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सत्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर इकावन जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद, साधारण-वनस्पतिकायिक

और चतुर्गतिनिगोदसाधारणवनस्पति-कायिक ये छहों प्रकारके जीव बादर और सूक्ष्मके भेदसे बारह प्रकारके होते हैं। और वे प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके

अद्वारह णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा वि अद्वारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि अद्वारस सब्बेदे एगट्ठं कदे चउपण्ण जीवसमासा। पुणो पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासा छत्तीस-जीवसमासेसु अवणिय पत्तेयसरीरबादरणिगोद-पदिद्विदापदिद्विद१ (प्रतिषु 'पदिद्विद-पज्जत्ता--' इति पाठः।) पज्जत्तापज्जत्त-सण्णद-चदुसु जीवसमासेसु पक्खित्तेसु अद्वत्तीस जीवसमासा हवन्ति। एत्थ एगुणवीस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा हवन्ति, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि तेत्तिया चेव सब्बेदे सत्तावण्ण जीवसमासा हवन्ति। एदे २ (प्रतिषु 'वीए' इति पाठः।) जीवसमासभेदा ३ (सामण्णजीव तसथावरेसु इगिविगलसयलचरिमदुगे। इंदियकाये चरिमस्स य दुत्तिचदुपण्णगभेदजुदे।। पणजुगले तससहिये तसस्स दुत्तिचदुरपण्णगभेदजुदे। छद्दुगपत्तेयम्हि य तसस्स तियचदुरपण्णगभेदजदे।। सगजुगलम्हि तसस्स य पणभंगजुदेसु होंति उणवीसा। एयादुणवीसोत्ति य इगिवित्तिगुणिदे हवे ठाणा।। सामण्णेण तिपंती पढमा विदिया अपुण्णगे इदरे। पज्जत्ते लद्धिअपज्जत्तेऽपढमा हवे पंतीः। गो. जी. ७५-७८.) सब्ब-ओघेसु वत्तव्वा।

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अद्वपाण-छप्पाण-

भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। प्रत्येकवनस्पतिकायिक, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीव ये सभी पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। इसप्रकार चौबीस और बारह ये सभी जीवसमास मिलकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद, साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्म भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अठारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, उतने ही अठारह निर्वृत्यपर्याप्तक और अठारह लब्धपर्याप्तक जीवसमास ये सब इकट्ठे करनेपर चौपन जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त छत्तीस जीवसमासोंमेंसे

प्रत्येक शरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येकशरीरसंबन्धी बादरनिगोद प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित इन दोनोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक इन चार जीवसमासोंके मिलानेपर अड़तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्म भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी उन्नीस निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास होते हैं, उन्नीस ही निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं और उन्नीस ही लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं। ये सब मिलाकर सत्तावन जीवसमास होते हैं। ये उपर्युक्त जीवसमासोंके भेद समस्त ओघालापोंमें कहना चाहिए।

सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अड्ड गाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दब्ब-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा २१३।

नं. २१३ षट्कायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प.	प्रा.	सं	र	इ	क	यो	व	क	इ	सं	द	ले	भ.	स	सं	अ	उ
	.			.	।	.	।	.	.	.	।	य.	.	.		.	इ	।	.
१	५	प.	१०,	४	४	५	६	१	३	४	८	७	४	द्र.	२	६	२	२	२
४	७	अ.	७	क्षी				५	अ	अ				६	भ.		सं	अ	स

		६, ६	९, ७	ण				अ	प	क				भा	अ		.	ह	क
		५, ५	८, ६	सं				यो	र	षा				.	.		अ	।	।
		४, ४	७, ५	.				ग.	।.	.				६			सं	अ	.
			६, ४											अ			.	ना	अ
			४, ३											ले			अ	.	ना
			४, २											.			नु	.	.
			१														.	.	यु
																			.
																			उ
																			.

जीवसमास आलापके आगे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालमें और अपर्याप्तकालमें छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलत्रय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः पांच पर्याप्तियां, पाच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः दशों प्राण, सात प्राण ; असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः नौ प्राण, सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः ; सात प्राण, पांच प्राण; व्दीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः छह प्राण, चार प्राण; एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार प्राण, तीन प्राण; सयोगकेवली जिनोंके चार प्राण तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें दो प्राण और अयोगकेवली जिनोंके एक आयु प्राण होता है। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचो जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत वेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक;

साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

तेसिं चैव पञ्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणद्वाणाणि, एक्को वा दो वा तिण्णि वाचत्तारि वा पंच वा छव्वा सत्त वा अद्द वा णव वा दस वा एक्कारस वा बारस वा तेरस वा चउद्दस वा पण्णारस वा सोलस वा सत्तारस वा अद्दारस वा एगूणवीस वा जीवसमासा, छ पञ्जत्तीओ पंच पञ्जत्तीओ चत्तारि पञ्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अद्दपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-एक्कपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अद्द णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा२१४ ।

नं. २१४ षट्कायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा.	सं	र	इं	क	यो	वे.	क	इ	सं	द	ले	२	स	सं	अ	उ
	.	.		.	।.	.	।.	.	.	.	।।	य.	.	.	।.	.	इ	।.	.
१	१९	६	१०	४	४	५	६	१	३	४	८	७	४	द्र.	२	६	२	२	२
४		५	९८	क्षी				१	अ	अ				६	२		सं	अ	स
		४	७६	ण				म.	प	क				भा	।.		.	।ह	।क
			४४	सं				४	ग.	षा				.	अ		अ	।.	।.
			१	.				व.		.				६	.		सं	अ	अ
								४						अ			.	ना	ना
								अ						ले			अ	.	.

सत्तारस वा चोत्तीस वा, अट्टारस वा छत्तीस वा, एगूणवीस वा अट्टत्तीस वा जीवसमासा; छ अपज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादिआदिपंच जादीओ, पुढविकायादि छक्काया, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, छ णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दब्बेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ;

दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी, तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ --- यहाँ मूलमें सत्तावन जीवसमास बतला आये हैं उनमें उन्नीस जीवसमास पर्याप्तसंबन्धी है और अट्टत्तीस अपर्याप्तसंबन्धी। उनमेंसे यहां पर्याप्तसंबन्धी उन्नीसका ही ग्रहण करना चाहिये। जिनका प्रकृतमें 'एक अथवा दो' इत्यादि रूपसे उल्लेख किया गया है।

उन्हीं षट्-कायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयम और सयोगकेव्रली ये पांच गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये अपर्याप्तक जीवोंसंबन्धी एक अथवा दो, दो अथवा चार, तीन अथवा छह, चार अथवा आठ, पांच अथवा दश, छह अथवा बारह, सात अथवा चौदह, आठ अथवा सोलह, नौ अथवा अठारह, दश अथवा बीस, ग्यारह अथवा बाईस, बारह अथवा चौबीस, तेरह अथवा छब्बीस, चौदह अथवा अट्टाईस, पन्द्रह अथवा तीस, सोलह अथवा बत्तीस, सत्रह अथवा चौत्तीस, अट्टारह अथवा छत्तीस, उन्नीस अथवा अडत्तीस जीवसमास होते हैं। छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी हैं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचो जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कर्मण ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी हैं, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी हैं, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक

मिच्छाइडिप्पहुडि जाव अकाइया१ (मु. अकाया।) ति मूलोघ-भंगो। णवरि मिच्छाइडिस्स
 तिविहस्स वि कायाणुवाद-मूलोघम्हि२ (मु. मूलोघभुत्त।) वुत्तजीवसमासा वत्तव्वा। णत्थि अणत्थ
 विसेसो।

नं. २१६ पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इं	क	यो	वे.	क	इ	सं	द	ले	भ.	स	सं	अ	उ
.	।.	.	.	.	।	य.	इ	।.	.
१	४	४	४	४	१	१	१	३	१	४	२	१	१	द्र.	२	१	१	२	२
मि	बा	प	प.		ति	ए	पृ.	अ	न		कु	अ	अ	६	भ.	मि	अ	अ	स
.	.	.	३		.	के		।.	पुं		म.	सं		भा	अ	.	सं	ह	क
	प.	४	अ					२	.		कु	.	च	।.	।.
	बा	अ	.					क			श्रु		।.	३				अ	अ
	.	.						र्म			.			अ				ना	ना
	अ.							.						शु				.	.
	सू													.					
	.																		
	प.																		
	सू																		
	.																		
	अ.																		

२१६ पुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि
 पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण-तिण्णि पाणा, चत्तारि

तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और उभय उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ --- यहाँ मूलमें जो सत्तावन जीवसमास कहे हैं उनमें अपर्याप्त सामान्यके उन्नीस हैं जिनका यहाँपर 'एक अथवा दो, दो अथवा चार,' इत्यादि संख्याओंके कथनमें आई हुई पूर्ववर्ती संख्याओंका एक, दो, तीन इत्यादि संख्याओंसे निर्देश किया है। अपर्याप्तके निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त ऐसे दो भेद कर लेनेपर उनका निर्देश दो, चार, छह इत्यादि संख्याओंके द्वारा किया गया है। यहाँपर इतना और समझ लेना चाहिये कि पूर्व पूर्ववर्ती संख्याएं जीवसमासोंके सामान्यरूपसे और उत्तर उत्तरवर्ती संख्याएं उनको विशेषरूपसे बतलाती हैं। इसका यह अभिप्राय हुआ कि किसी भी संख्याके द्वारा संपूर्ण अपर्याप्त जीव संग्रहीत कर लिये गये हैं। भिन्न भिन्न संख्याएं केवल उनके भेद-प्रभेदोंको सूचित करनेके लिये ही दी गई है।

सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, दो जीवसमासा चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दब्बेण छ लेस्साओ, भावेण

पर्याप्त जीवसमासके उन्नीस विकल्पोंमें भी यही क्रम जान लेना चाहिये। गोम्मटसार जीवकाण्डमें जीवसमासोंको बतलाते हुए तीन पंक्तियां कर दी हैं। पहली पंक्तिमें एक, दो आदि उन्नीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन सामान्यकी अपेक्षा किया है। दूसरी पंक्तिमें दो, चार आदि अड़तीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त और अपर्याप्त इन दो भेदोंकी अपेक्षा किया है। तिसरी पंक्तिमें तीन, छह आदि सत्तावनतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त इन तीन भेदोंकी अपेक्षा किया है।

सामान्य षट्कायिक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अकायिक अर्थात् सिध्द जीवों तकके आलाप मूल ओघालापकेसमान ही जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इन तीनों ही प्रकारके मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते समय कायानुवादके मूलोघालापमें कहे गये सभी जीवसमास कहना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्यत्र अन्य कोई विशेषता नहीं है।

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त, बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त ये दो जीवसमास, अथवा शुध्द बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त शुध्द सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त, खर बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और खर सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय,

किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा हौति अणागारुवजुत्ता वा२१७।

नं. २१७ पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग.	इं	क	यो	व	क	इ	सं	द	ले	१	स	सं	अ	उ
.	।	॥	य.	.	.	।	.	ज्ञि	।	.

१	२	४	४	४	१	१	१	१	१	४	२	१	१	द्र.	२	१	१	१	२
मि	बा				ति	ए	पृ.	अ	=		कु	अ	अ	६	२	मि	अ	अ	स
.	.				.	के	.	ौद	।		म.	सं		भा	।.	.	सं.	ह	क
	प.					.		।.	प		कु	.	ट	.	अ		।.	।.	।.
	सू								ु.		श्रु		।.	३	.			अ	ना
	प.													शु				.	.
	४													.					.

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो

कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ --- यहाँ पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप कहते समय दो अथवा चार जीवसमास बतलाये हैं। उनमें दो जीवसमास बतलानेका कारण तो स्पष्ट ही है। परन्तु विकल्पसे जो चार जीवसमास बतलाये गये हैं उसके दो कारण प्रतीत होते हैं। एक तो यह कि गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकामें जीवसमासोंका विशेष वर्णन करते समय पृथिवीके शुद्धपृथिवी और खरपृथिवी ऐसे दो भेद किये हैं। ये दो भेद बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो दो प्रकारके हो जाते हैं। इसप्रकार पर्याप्त अवस्था विशिष्ट इन चारों भेदोंके ग्रहण करनेपर चार जीवसमास हो जाते हैं। दूसरा कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वीरसेनस्वामीने स्वयं बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके अतिरिक्त बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इसप्रकार तीन

प्रकारके आलाप और बतलाये हैं। इनमेंसे प्रथम सामान्यालापमें पर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन तीनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव हो जाता है और निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्यालापमें पर्याप्तक और निर्वृत्यपर्याप्तक इन दो प्रकारके जीवोंके आलापोंका ही अन्तर्भाव होता है। दूसरे पर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम और द्वितीय दोनों पर्याप्तालापोंमें वास्तवमें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, निर्वृत्तिसे पर्याप्तक जीव ही दोनों जगह पर्याप्तरूपसे ग्रहण किये गये हैं। अपर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम अपर्याप्तालापमें निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन दोनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव होता है। परंतु निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके अपर्याप्तालापमें केवल एक निर्वृत्यपर्याप्तक कालसंबन्धी आलापोंका ही ग्रहण होता है। इनमेंसे निर्वृत्तिपर्याप्तककी अपर्याप्तावस्थामें पर्याप्तनामकर्मका

अचक्खुदंसणं, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२१८।

नं. २१८ पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इं	क	यो	व	क	इ	सं	द.	ले	भ.	स	सं	अ	उ
.	।	।	य.	इ	।	.
																	।		
१	२	४	३	४	१	१	१	२	१	४	२	१	१	द्र.	२	१	१	२	२
मि	बा	अ			ति	ए	पृ.	अ	=		कु	अ	अ	२	भ.	मि	अ	अ	स
.	.	.			.	के	.	।	।		म.	सं	च	क	अ	.	सं	।ह	।क
	अ.					.		मि	प		कु	.	.	।	.	.	.	।र	।
	सू							.	ु.		श्रु			शु				अ	र
	अ.							क			.			.				ना	अ
								र्म						भा				हा	ना

बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये तीन योग;

भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२१९ ।